سُوْرَةُ النَّاس مَكِّيَّةٌ

सूरह नास मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ (1)

कहो: (कि) मैं शरण मांगता हूं लोगों के पालनहार की।

مَلِكِ النَّاسِ ۙ (2)

लोगों के अधिपति (वास्तविक राजा) की

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ (3)

लोगों के उपास्य (माबूद) की।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ (4)

(मन में) कुटिल फुसफुसाहट (दुष्प्रेरणा) डालने (और) पीछे हटने वाले (शैतान) की बुराई से

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ (5)

जो लोगों के (सीने / हृदय) में कुटिल फुसफुसाहट (दुष्प्रेरणा) डालता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ع (6)

(चाहे वो) जिन्नातों में से हो या इंसानों में से।